झूलने

पतरस बुख़ारी

(प्रस्तुत लेख "झूलने" नामक पुस्तक की प्रस्तावना है। इस पुस्तक के रचयिता सूफ़ी गुलाम मुस्तफ़ा तबस्सुम (1899-1978) थे जो उर्दू के लेखक, कवि, आलोचक, शिक्षक और ब्रॉडकास्टर थे। झूलने छोटी-छोटी लगभग पचास कविताओं पर आधारित एक संग्रह है, जिसकी प्रत्येक कविता के लिए मिशेल फ़ारूक़ी द्वारा बनाया हुआ एक कार्टून है।

बच्चों के साहित्य के संबंध में सूफ़ी ग़ुलाम मुस्तफ़ा तबस्सुम का नाम नया नहीं था। झूलने से पहले उनके द्वारा रचित बच्चों की कवितायें, विशेष रूप से उनके "टूट बटूट" नामक किरदार से संबंधित कवितायें, बच्चों और बड़ों में समान रूप से लोकप्रिय रह चुकी थीं।

पतरस बुख़ारी द्वारा लिखित यह प्रस्तावना उनकी अन्य रचनाओं की भांति अत्यंत रोचक है और हल्के-फुल्के अंदाज़ में कही हुई बुद्धिमत्तापूर्ण बातों से जगमगा रही है। ---अनुवादक)

झूलने की कुछ कविताओं के नमूने प्रस्तुत हैं:

गुड़िया

अज़रा की गुड़िया
सोई हुई है
घंटी बजाओ!
उसको जगाओ!
तौबा है मेरी
मैं न जगाऊँ
वह रो पड़ेगी
मुझसे लड़ेगी

चीचूँ

चीचूँ-चीचूँ चाचा
घड़ी पे चूहा नाचा
घड़ी ने एक बजाया
चूहा नीचे आया

टर-टर

करे टर-टर, करे टर-टर
तेरी लारी, तेरी मोटर
चले छम छम, चले छम छम
मेरा घोड़ा, मेरी टमटम

अंडा

"मुर्गे, मैंने अंडा दिया!"
"मुर्गी! तूने खूब किया!"
"अंडे इतने चंगे हैं,
पाँव मेरे नंगे हैं"
"कैसी बातें करती हो ?
अंडे बेचो! जूते लो!"

बिल्ली

दुनिया के रंग निराले
बिल्ली ने चूहे पाले
चूहों ने धूम मचाई
बिल्ली की शामत आई

दोनों शेर

एक था तीतर, एक बटेर
लड़ने में थे दोनों शेर
लड़ते लड़ते हो गई गुम
एक की चोंच और एक की दुम

मुन्ना

चमचा लंबा थाली गोल
बन्दर लेकर आया ढोल
पेड़ पे नाचा काला नाग
चूहा गाता आया राग

चाँद पे जाकर कूदा शेर
बिल्ली खा गई सारे बेर
चमचा, थाली ले गया साथ
मुन्ना रह गया ख़ाली हाथ

***

ऐसी हल्की-फुल्की पुस्तक पर जो छोटे बच्चों के लिए लिखी गई है प्रस्तावना का बोझ न पड़ना चाहिए था। लेकिन बच्चों के साथ प्रकृति ने माता-पिता की और मनुष्य ने गुरु की प्रतिबद्धता लगा रखी है। सूफ़ी तबस्सुम को जो पुस्तक के लेखक होने के अतिरिक्त "माता-पिता" भी हैं और "गुरु" भी, यह गवारा न हुआ कि बच्चों को तो बहलाया जाए और माता-पिता और गुरुओं की परवाह न की जाए। इसलिए तय हुआ कि वे बच्चों को कवितायेँ सुनाएँ और मैं मता-पिता आदि को बातों में लगाए रखूँ।

बच्चों का बहलाना आसान है। बड़ों का बहलाना आसान नहीं। बच्चों ने तो यह पढ़ा कि "चीचूँ-चीचूँ चाचा, घड़ी पे चूहा नाचा" और ख़ुश हुए। बड़े कहेंगे "चीचूँ" हमने तो किसी शब्दकोष में देखा नहीं। और यदि "चाचा" से आशय "चचा" है तो यह सभी लागों की भाषा नहीं और यह जो "घड़ी पे चूहा नाचा", तो भला क्यों? और बहरहाल इस तुकबंदी का नतीजा क्या? इससे बच्चों को कौन सी सीख मिली?

ये सब प्रश्न अत्यंत ज़िम्मेदारी भरे और गंभीर प्रश्न हैं। दूसरे शब्दों में उन लोगों के प्रश्न हैं जो अपना बचपन भुला बैठे हैं। या जो यह संकल्प किए बैठे हैं कि जिन बातों से उनका बचपन रंगीन हुआ था, वे इस दुनिया में अब न दोहराई जाएँगी। तुकबंदी मिलाना बेफ़ायदा बात है। बोझों मारना चाहिए।

ख़ुदा का शुक्र है, सूफ़ी तबस्सुम को एक ऐसी दानाई (बुद्धिमत्ता) प्रदान की गई है कि नादानी के स्वाद से अभी वंचित नहीं हुए। वे जानते हैं कि बच्चों का मन वह विचित्र दुनिया है जिसमें पेड़ों पर नाग नाचते हैं और बिल्लियाँ बेर खाती हैं और टर-टर मोटर, छम छम टम-टम में लय व सुर के वो सारे स्वाद समा जाते हैं जो बड़े होकर तानसेन के चमत्कार से भी उपलब्ध नहीं होते। यह वह दुनिया है जिसमें गुड़ियाँ और जानवर और पक्षी और इंसान सब एक दूसरे के दोस्त हैं और एक दूसरे के दुःख-सुख में शरीक होते हैं। यानी सब प्राणी एक ही ईश्वर के प्राणी होते हैं। बड़े होकर मानव मस्तिष्क हज़ार दार्शनिक उहापोह और नए-से-नए विचार के बाद भी मुश्किल से इस सतह पर पहुँचता है।

इसलिए क़ाबिले-रश्क हैं सूफ़ी तबस्सुम कि निःसंकोच इस रंगीन दुनिया में चहचहा रहे हैं। सब जानते हैं कि सूफ़ी तबस्सुम एक परिष्कृत स्वभाव के काव्य-मर्मज्ञ और कवि हैं। उर्दू फ़ारसी ग़ज़ल उस्ताद कवियों की शैली में कहते हैं और भावों की अभिव्यक्ति की सूक्ष्मताओं को ख़ूब समझते हैं। यह संग्रह उनकी कविता में रविवार का दिन है और यूँ तो रविवार मनाने में उन्होंने बड़े-बड़े उस्ताद कवियों का अनुसरण किया है, लेकिन यह न समझिये कि इस दिन वे बिल्कुल ही दिमाग़ ख़ाली करके बैठते हैं और जो मुँह में आए कह डालते हैं। ग़ौर से देखिये तो मालूम होगा कि यह काम काफ़िया (तुकबन्दी) और छंद और ध्वनि व लय-सुर और शब्दों की

सूक्ष्मताओं पर नियंत्रण रखे बिना संभव न था। इसलिए सूफ़ी 'तबस्सुम' की सृजनात्मक निपुणता, मानसिक परिपक्वता व विदग्धता के प्रमाण इसमें जगह-जगह आपको नज़र आएँगे। ऐसी कविता का दर्जा मोहमल-ए-मुम्तना (अति-सरल अनर्गल बात)[1] का दर्जा है। जैसे सहल-ए-मुम्तना (अति-सरल कविता) सरल नहीं होता उसी तरह मोहमल-ए-मुम्तना भी मोहमल (अनर्गल) नहीं होता। दुआ है कि सूफ़ी 'तबस्सुम' का यह बचपन हमेशा क़ायम रहे और उनके प्रशंसक हमेशा उन्हें यह कहने के क़ाबिल हों किः

चहल साल उम्र-ए-अज़ीज़त गुज़श्त
मिज़ाज-ए-तू अज़ हाल-ए-तिफ़ली नगश्त
(*चालीस साल तुम्हारी प्रिय उम्र गुज़र गई लेकिन*
तुम्हारा स्वभाव बचपन की हालत से बाहर न निकला)

"पतरस"
दिल्ली, 5 जून, 1946

[1] *मोहमल-ए-मुम्तना- अर्थात अति सरल ढंग से कही गई अनर्गल या ऊटपटांग बात। यह शब्द-युग्म "सहल-ए-मुम्तना" की पैरोडी है जिसका अर्थ है ऐसा अति सरल शेर जिसको और सरल बनाना या गद्य में भी उससे सरल बनाना संभव ही न हो। देखने में यह आसान तो लगता है लेकिन सहल-ए-मुम्तना कहना बहुत मुश्किल काम है।*